श्री शीतलनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री शीतलनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शीतलनाथ विधान

जय बोलिये

मनसंताप के हारी,
मंगल प्रतापकारी,
सुख-शांतिकारी,
मोक्षमहल निहारी,
शुद्धात्म विहारी,
निर्दोष निर्विकारी,
जिनशासन के अधिकारी,
भक्तों को शीतलकारी,
शीतल परिणामी-शीतलधाम के स्वामी
परमपूज्य
श्री शीतलनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : अर्हत् राम रमैया...)

शीतलनाथ निराले हो, भक्तों के रखवाले।[2]
मेरे शीतल सुन्दर हैं, साँचे पूज्य दिगम्बर हैं।
भवसागर में डूबी नैया, पार लगाने वाले॥

चारों ओर अँधेरा फैला, कोई नहीं बचैया।
बहिरातम मय स्वार्थी जग में, कोई नहीं तिरैया॥
प्रभु ये बालक डूब न जाये[2], तुम बिन कौन सँभाले।
शीतलनाथ निराले हो.....॥ 1॥

कभी न मैंने तुम्हें बताये, संकट बहुत बड़े हैं।
संकट को बतलाया शीतल, मेरे निकट खड़े हैं॥
भक्त और भगवान् की जोड़ी[2], अब तो नाथ बना ले।
शीतलनाथ निराले हो.....॥ 2॥

जो शीतल तन शीतल करता, वो शीतलता कच्ची।
जो आतम को शीतल कर दे, वो शीतलता सच्ची॥
तन शीतल 'सुव्रत' ना चाहें[2], अब तो गले लगा ले।
शीतलनाथ निराले हो.....॥ 3॥

श्री शीतलनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुए, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गाएँ।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का संताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षयपद को हम ध्याए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगंधी, जिसका फल जग भुगत रहा॥
पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गए सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पाएँ इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अंधों को दिन-रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो मंदिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ाके कर्म जलाने, आतम महकाने आए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।
पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाए।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घपद मन में भाए।

हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आए॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

आरण नामक स्वर्ग लोक तज, चैत्र अष्टमी कृष्ण रही।
गर्भ सुनन्दा माँ का पाया, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भ कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस जब आई, नगर भद्रपुर जन्म लिया।
दृढ़रथ महाराज का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्म कल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघ कृष्ण बारस को त्यागा, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तप कल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण चौदस की तिथि को, घातिकर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ल अष्टमी संध्या, पद्मासन से कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥
अष्टकर्म का बन्धन सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जग में क्या शीतल रहा, यही समझने बात।
जयमाला के नाम हम, ध्याएँ शीतलनाथ॥

(ज्ञानोदय)

दृढ़रथ पिता सुनन्दा माँ के, शीतलनाथ पुत्र प्यारे।
धर्म-कर्म विच्छेद हुआ तो, स्वर्ग लोक से अवतारे॥
नब्बे धनुष उच्च कंचन सा, तीर्थंकर तन प्राप्त किया।
अनुपम सुखदा पूज्य पिता का, पद पाकर के राज्य किया॥ 1॥
वन विहार को कभी गए तो, हिम-पाला देखा वन में।
किन्तु क्षणिक वह नष्ट हुआ तो, जल्दी वैरागे मन में॥
क्षण-क्षण नश्वर देख जगत् को, मोह बन्ध तजने मचले।
राग-द्वेष आदिक दोषों को, शीघ्र त्यागने को निकले॥ 2॥
दुखी और दुख, दुख के कारण, समझ इन्हें अब तजना है।
सुखी और सुख, सुख के कारण, समझ इन्हें अब भजना है॥
विषय भोग में यदि सुख होता, तो मैं सबसे बड़ा सुखी।
किन्तु मुझे संतोष तनिक ना, इनसे तो मैं हुआ दुखी॥ 3॥
विषय भोग से जो सुख माने, वह सुख मिथ्या है भ्राता।
ये ही सुखाभास चेतन को, भव गलियों में भटकाता॥
देह जेल में यथा बँधे ज्यों, पिंजड़े में पक्षी तोता।
बँधा हुआ खम्भे से हाथी, रोता सदा दुखी होता॥ 4॥
उदासीन जग से होना ही, साँचा सुख वह कहलाता।
मोह त्याग बिन वह साँचा सुख, कौन तपस्या बिन पाता?
राज्य भोग सब मोह त्यागकर, जल्दी दीक्षा ले डाली।
केवलज्ञान प्राप्त करने को, घातिकर्म रज हर डाली॥ 5॥
दोष अठारह नशा दिए तो, समवसरण में शोभित हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों में पूजित हो॥

हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आप में, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥ 6॥

(दोहा)

भक्ति वन्दना से खिले, शिव अंकुर वैराग्य।
हे जिन! शीतल छाँव में, पले बढ़े सौभाग्य॥
शीतल प्रभु को पूजकर, होते भक्त निहाल।
सही गलत को जानकर, छोड़ें जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं ...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(दस करण) (चौपाई)

कर्म बन्ध से हम अज्ञानी, दर-दर ठोकर खाते स्वामी।
तजें आप सम हम हर बन्धा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 1॥

उत्कर्षण से कर्म अवस्था, बढ़ जाए दे दुख का रस्ता।
तुम सम तज उत्कर्षण धंधा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उत्कर्षण विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 2॥

आतम में जो कर्म ठहरते, पीड़ादायक सत्ता कहते।
तुम सम सत्ता करें भंगा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-सत्ता विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 3॥

कर्म करें जब सुखिया-दुखिया, कर्म-उदय वह कहते मुखिया।
तुम सम तजें उदय की गंगा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उदय विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 4॥

कर्म उदय जब ना आ पाते, उसको उपशम ग्रन्थ बताते।
तुम सम तज लें उपशम संगा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उपशम विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 5 ॥

समय पूर्व जो उदय कराती, उदीरणा जिनवाणी गाती।
उदीरणा तुम सम तज द्वन्द्वा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-उदीरणा विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 6 ॥

कर्म संक्रमण अंतर वाले, खा जाते हैं आत्म उजाले।
करें संक्रमण तुम सम ठंडा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-संक्रमण विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 7 ॥

अपकर्षण से कर्म उमरिया, कम होती ये नहीं खबरिया।
तुम सम तज अपकर्षण रंगा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-अपकर्षण विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 8 ॥

उत्कर्षण अपकर्षण ना हो, वही निधत्ति कर्म कहा हो।
तुम सम तजें निधत्ति जंगा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

ॐ ह्रीं कर्म-निधत्ति विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 9 ॥

कर्म निकाचित वो कहलाते, चार करण हो जहाँ न पाते।
तुम सम तजें निकाचित फंदा, नमोऽस्तु! शीतल नाथ जिनन्दा॥

(दोहा)

कर्मों के ये दस करण, त्यागे शीतलनाथ।
करें नमोऽस्तु भज चरण, सादर टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं कर्म-निकाचित विनाशनसमर्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 10 ॥

(देवों के दस भेदों से पूजित) (लय-आनन्द अपार है...)

आनन्द आपर है, शीतल प्रभु का द्वार है।
सुख शान्तिदायक स्वामी की, हो रही जय-जयकार
ह ॥
इन्द्रों के परिवार पूजते, शीतलनाथ जिनन्दा जी।
भक्तों का क्या कहना भैया, पाते परमानन्दा जी॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं इन्द्रपूज्य सर्व-वैभवदायी श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 11 ॥

इन्द्रों सम सामानिक पूजें, शीतलप्रभु की पगतलियाँ।
जिससे होते दिवस दशहरा, रातें हों दीपावलियाँ॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं सामानिकपूज्य-निजसमकर्त्ता श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 12 ॥

त्रायस्त्रिंश रहे संख्या में, बस तेतीस निराले से।
पिता गुरु मंत्री के जैसे, प्रभु को भजने वाले से॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं त्रायश्त्रिंशपूज्य-सर्वबन्धनहर्त्ता श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 13 ॥

प्रेमी मित्र सभासद जैसे, वही पारिषद कहलाते।
सिद्ध सभा में प्रवेश पाने, भक्ति अर्चना दिखलाते॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं पारिषदपूज्य-मनोकामनापूरक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 14 ॥

आत्मरक्ष वे कहलाते जो, रहे अंगरक्षक जैसे।
प्रभु की पूजा करके कहते, रहें नाथ! बिन हम कैसे॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं आत्मरक्षपूज्य-चैतन्यविधायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 15 ॥

करें लोक का पालन जो सुर, लोकपाल वे कहलाते।
कोषाध्यक्ष अर्थचर जैसे, आतमधन पर ललचाते॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं लोकपालपूज्य-निजधनप्रदायकश्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 16 ॥

पदाति सेना सात तरह की, वही अनीक नाम धारें।
कर्म शत्रु पर विजय प्राप्ति को, लें श्रद्धा की तलवारें॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं अनीकपूज्य-शत्रुविजयप्रदायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 17 ॥

गाँव शहर के जैसे वासी, देव प्रकीर्णक कहलाते।
सिद्ध शहर में वसने हेतु, अरिहन्तों के गुण गाते॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं प्रकीर्णकपूज्य-निजनिवासप्रदायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 18 ॥

आभियोग्य सुर दासों जैसे, वाहन आदिक बन सेवें।
लेकिन जिनवर की सेवा कर, जीवन सफल बना लेवें॥ आनन्द...

ॐ ह्रीं आभियोग्यपूज्य-लोकपूज्यताप्रदायक श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 19 ॥

बहु पापी किल्विषिक कहाते, सीमा तट जैसे वासी।
फिर भी पुण्यात्मा बनने को, जिन-पूजा के अभिलाषी॥ आनन्द...

(दोहा)

देव भजें दस भेद के, शतेन्द्र के परिवार।
ऐसे शीतलनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं किल्विषिकपूज्य-संकटपापहर्त्ता श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 20॥

पूर्णार्घ्य

(शंभु)

जग कर्मों की आशाओं से, हम जी न सके मर भी न सके।
आनन्द भरी परमातम को, हम भज न सके पा भी न सके॥
पर जब से नाथ! तुम्हें पूजा, यह आश जगा डाली हमने।
सो नमोऽस्तु का फल यह चाहें, जो पदवी पाई है तुमने॥

ॐ ह्रीं जगत्पूज्य-सर्वकर्मबन्धरहित श्रीशीतलनाथजिनेद्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

मनमानी मन ना करे, तजने मनस्-तरंग।
जयमाला से गीत का, शीतल बनें अनंग॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

पद्म गुल्म जो वत्स देश का, न्यायी राज्य नरेश।
बसंत ऋतु का हुआ समागम, तो क्रीड़ामय देश॥
किन्तु कहीं ऋतु विला गयी तो, व्याकुल दुखी अपार।
राजा को वैराग्य हुआ तब, दिया पुत्र को भार॥ 1॥

पद्मगुल्म आनन्द नाम के, मुनि के जाकर पास।
सकल परिग्रह त्याग देह से, विमुख धरे संन्यास॥
रत्नत्रयमय ज्ञान ध्यान तक, सोलहकारण भाव।
तीर्थंकर के नामकर्म का, किया बन्ध सद्भाव॥2॥

तथा आयु के अन्त समय में, समाधि-मरण सँभाल।
आरण नामक स्वर्ग भोग को, भोगे इन्द्र विशाल॥
आयु इन्द्र की पूर्ण भोग कर, लिया भद्रपुर जन्म।
भद्दलपुर या नगर विदिशा, हुआ आज का धन्य॥ 3॥

गर्भ जन्म तप और ज्ञान के, चार हुए कल्याण।
नेमिनाथ का समवसरण भी, लगा यहीं पर आन॥
इसी विदिशा की धरती पर, पावन वर्षायोग।
महावीर प्रभु किए तभी जो, कण-कण वन्दन योग्य॥ 4॥

गुरुवर समंतभद्र यहीं पर, बजा गए जिन ढोल।
लिए समाधि इसी धरा पर, भट्टारक अनमोल॥
यहीं उदयगिरि जहाँ गुफाएँ, चरण चिह्न अवशेष।
जहाँ एक मंदिर में शोभित, पारसनाथ जिनेश॥ 5॥

शिलालेख भी वहीं गुफा में, दिए पुरातन ज्ञान।
तपश्चरण के योग्य धरा यह, कण-कण में भगवान्॥
तभी दिए विद्यागुरुवर जी, भक्तों को आशीष।
समवसरण की अद्भुत रचना, जिसके शीतल ईश॥ 6॥

चौथा काल यहाँ पर था तब, किए सुरों ने पर्व।
गुरु-कृपा से अब भक्तों ने, उत्सव पाए सर्व॥
क्योंकि यहाँ शीतल भगवन् ने, की थी क्रीड़ा बाल।
अर्थ-काम पुरुषार्थ साधकर, त्यागे जग जंजाल॥ 7॥

धर्म-मोक्ष पुरुषार्थ साधकर, धारा था वैराग्य।
वाह! वाह! क्या राज्य त्यागना केशलौंच सौभाग्य॥
यथाजात बन बने निरम्बर, तीर्थंकर जिनरूप।
समवसरण को छोड़ मोक्ष को, पा बैठे चिद्रूप॥ 8॥

नाथ! आपकी महिमा गाने, सुरपति नहीं समर्थ।
सुर-छंदों के ज्ञान बिना हम, किए भक्ति बिन शर्त॥
हमें भक्ति फल इतना दे दो, सदा रहे प्रभु ध्यान।
पद चिह्नों पर चलकर होवे, 'सुव्रत' का कल्याण॥ 9॥

(दोहा)

जयमाला के नाम से, गाए प्रभु के गीत।
समवसरण सा सुख मिले, यही भक्ति की रीत॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

॥ इति श्री शीतलनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

पार्श्वनाथ पदधाम में, 'सिलवानी' के ग्राम।
शीतलनाथ विधान का, शुरू किया शुभ काम॥
शान्तिनाथ की छाँव में, 'विद्यागुरु' वरदान।
'रामटेक' में पूर्ण यह, 'सुव्रत' लिखे विधान॥
मंगल पाँच अगस्त को, दो हजार सन आठ।
पूर्ण हुआ कर्तव्य यह, बढ़े धर्म का ठाठ॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

शीतल जिनवर के गुण गाओ, होऽऽऽ
शीतल जिनवर के गुण गाओ, सादर करो प्रणाम हो।
झूम-झूम के करो आरती, तन-मन शीतलधाम हो॥

दसवें तीर्थंकर कहलाते, शीतल करते दशों दिशा[2]
दसों धर्म-ध्यानों के साधन, बदलो दशा-दिशा विदिशा[2]
तृषा-मृषा हिंसा की हर लो, होऽऽऽ
तृषा-मृषा हिंसा की हर लो, गम की निशा विराम हो।
झूम-झूम के.....॥ 1॥
दीप-ज्योति ज्यों हरे अँधेरा, राह उजाला भी देती[2]
वैसे नाथ! आरती तुमरी, पाप-अंध गम हर लेती[2]
जलें दीप से दीप हृदय के, होऽऽऽ
जलें दीप से दीप हृदय के, नहीं वैर का नाम हो।
झूम-झूम के.....॥ 2॥
पूजक पर तुम खुश ना होते, ना निंदक पर रोष करो[2]
फिर भी सुन लो अरज हमारी 'सुव्रत' के सब दोष हरो[2]
हमें भक्ति फल बस यह दे दो, होऽऽऽ
हमें भक्ति फल बस ये दे दो, होठों पर प्रभु नाम हो।
झूम-झूम के.....॥ 3॥